इकाई 5 समाजशास्त्र और इतिहास का संबंध*

संरचना

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 समाजशास्त्र और इतिहास का संबंध

- 5.2.1 इतिहास को पारिभाषित करना
- 5.2.2 समाजशास्त्र और इतिहास का संबंध
- 5.2.3 समाजशास्त्र और इतिहास में अंतर

5.3 एक उपविधा के रूप में एतिहासिक समाजशास्त्र

5.4 सारांश

5.5 संदर्भ

5.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात्, आप निम्न को समझने में सक्षम होंगे :

- सामाजिक शास्त्र के विधा के रूप में इतिहास की व्याख्या;
- समाजशास्त्र और इतिहास के बीच के आंतरिक संबंध;
- समाजशास्त्र और इतिहास के बीच के अंतर; तथा
- समाजशास्त्र और इतिहास के प्रतिच्छेदन के परिणाम के रूप में ऐतिहासिक समाजशास्त्र को समझना।

5.1 प्रस्तावना

यह इकाई इतिहास के साथ समाजशास्त्र के संबंध को बताती है। दोनों विषय बहुत अधिक अंतरसंबंधित हैं। समाजशास्त्र को अक्सर समाज के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जाता है। विशेष रूप से, किसी भी समाज का कोई अध्ययन अपने इतिहास या अतीत को देखे बिना पूरा किया जा सकता है। यह देखना बेहद जरूरी है कि, अतीत में समाज कैसे विकसित हुआ है? किस तरह की परिस्थितियों और उदाहरणों के माध्यम से समाज आगे बढ़ा या विकसित हुआ है? इसकी संरचना और कार्यों के बदलावों में कारकों ने क्या योगदान दिया है? इस प्रकार, किसी भी समाज, समूह या संस्थानों और अपनी वर्तमान स्थिति को समझने के लिए अपने अतीत की सराहना करने की आवश्यकता है। यह देखा जा सकता है कि समाजशास्त्र के उद्‌भव ने ऐतिहासिक विकास जैसे फ्रांसीसी और औद्योगिक क्रांति, शहरों के विकास और सामाजिक संस्थानों और व्यक्तिगत अधिकारों और स्वतंत्रता के विकास में स्वयं आकार लिया है। विभिन्न पूर्व विद्वानों या समाजशास्त्र के संस्थापकों जैसे इब्न खल्दून, आगस्त कॉम्टे, हरबर्ट स्पेंसर, मैक्स वेबर, इमाईल दुर्खीम, कार्ल मार्क्स आदि ने सामाजिक संरचना, परिवर्तन और गतिशीलता के विश्लेषण में इतिहास या ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को महत्व दिया। समाजशास्त्र और अतीत (इतिहास) एक दूसरे से गहरे जुड़े हुए हैं। इसके अतिरिक्त, इतिहास ऐतिहासिक घटनाओं का विस्तार और विश्लेषण करने में समाजशास्त्र की मदद करता है। यह दर असल मानव जीवन के पूर्व के

*डॉ. शाहीद, मानू, हैदराबाद

सामाजिक पहलुओं पर प्रकाश डालता है। इस संदर्भ में यह मुख्यतः दोनों विषयों के सामाजिक विकास को समझने में एक-दूसरे की मदद करता है। इसलिए, ऐतिहासिक समाजशास्त्र, सामाजिक इतिहास और सांस्कृतिक इतिहास जैसा उप-क्षेत्र समाजशास्त्र और इतिहास के टकराव के परिणाम के रूप में उभरा।

समाज की संरचना, कार्यों और परिवर्तनों के संदर्भ में अध्ययन या व्याख्या करते समय समाजशास्त्री प्रायः 'संदर्भ' के बारे में बात करते हैं। इस स्थिति में, समय और स्थान वे दो महत्वपूर्ण कारक हैं जो सामाजिक यथार्थता के प्रासंगिक पहलुओं को उत्तराधिकार में प्राप्त करता है और इसे दर्शाता है। सामाजिक यथार्थता के विकास को समझाने का समय एक महत्वपूर्ण कारक है क्योंकि सामाजिक यथार्थता समय के साथ आकार लेती है। चूंकि, इतिहास समय या समाज के आवधिक विकास जैसे कारकों पर आधारित होता है, तो यह वास्तव में समाजशास्त्री को अधिक व्यवस्थित रूप से समाज का अध्ययन करने में मदद करता है। यह समाजशास्त्रियों को वर्तमान स्थिति और समाज के विकास संबंधी तय की गई दूरी को व्यक्त करने के लिए तर्क प्रदान करने में सहायता करता है। कॉम्टे ने अपने त्रिस्तरीय नियम में, समाज के विकास के विश्लेषण में स्पेंसर ने, आदर्श प्रकारों और शहर के विकास के विस्तार में वेबर ने और वर्ग संघर्ष और सामाजिक परिवर्तनों के अपने विश्लेषण में मार्क्स जैसे विभिन्न समाजशास्त्रियों ने अपने सामाजिक विश्लेषण में ऐतिहासिक आयाम का उपयोग किया है। इस प्रकार, इतिहास और समाजशास्त्र एक-दूसरे से बहुत निकटता से संबंधित हैं। हालांकि, हम यह भी देख सकते हैं कि दोनों विषयों की प्रकृति और दृष्टिकोण में भिन्नता है, फिर भी वे कई बिंदुओं पर एक दूसरे को काटता या संकरण करता है। परिणामस्वरूप, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है ऐतिहासिक समाजशास्त्र दो विषयों के बीच आपसी अन्तःप्रतिछेदऩ के उपशाखा के रूप में उभरा है। यह इकाई समाजशास्त्र और इतिहास के बीच के इस तरह के अन्तःप्रतिछेदऩ और अंतर-संबंधों को विस्तारित करने पर केंद्रित है।

5.2 समाजशास्त्र और इतिहास का संबंध

5.2.1 इतिहास को पारिभाषित करना

इतिहास को प्रायः अतीत के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जाता है। इतिहास का अध्ययन करने वाले इतिहासकार, सामाजिक घटनाओं और विकास की ओर अग्रसर घटनाओं और परिस्थितियों के अध्ययन कारणों और प्रभावों का अध्ययन करते हैं। शब्द मल्लारी (2013), 'इतिहास', कई पारस्परिक पहलुओं में सन्निहित है; सबसे पहले, इतिहास एक अतीत है या अतीत में घटित हुई चीजें हैं, दूसरी बात, अतीत में घटित हुई घटनाओं का इतिहास बताता है। विभिन्न विचारकों ने इतिहास को पुरातात्विक साक्ष्य के आधार पर मानव के अतीत के अध्ययन के रूप में वर्णन किया है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि इस तथाकथित अतीत का अपना सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक पहलू भी है। इतिहासकार समाज के प्रकार, उनकी संरचना, संस्कृति, सभ्यता और राजनीति मानव समाजों को देखते थे, और समय काल के साथ विकसित होता है। इतिहास समय और काल की विशेषताओं के संबंध में अपने सामाजिक डोमेन का अध्ययन करता है।

विशेष रूप से, इतिहास कई मामलों में महत्वपूर्ण है। प्रथमतः, जैसे स्मृति किसी व्यक्ति के लिए स्थान रखता है वैसे ही इतिहास समाज के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दूसरा, जैसे स्मृति किसी भी व्यक्ति को पहचान और मान्यता प्रदान करता है वैसे ही इतिहास समूहों या समाज में एक समुदाय को पहचान और मान्यता प्रदान करता है। यह किसी की

जड़ों, जैसा कि यह अतीत में घटित हुआ होगा उस ऐतिहासिकता या विकास के मिलान बिन्दू की ओर इशारा करता है। सामाजिक यथार्थ को उजागर करने के लिए इतिहास की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण और निर्णायक बनाने वाले इस तरह के महत्वपूर्ण कार्यों के कारण आवश्यक हो जाती है, जहां विभिन्न विवाद उत्पन्न हो जाते है यह वहाँ भी निर्णायक स्थान रखता है।

5.2.2 समाजशास्त्र और इतिहास का संबंध

समाजशास्त्र और इतिहास एक दूसरे से अंतरसंबंधित है। समाजशास्त्र समाज का अध्ययन करता है और उसके ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को देखकर वर्तमान समस्या पर ध्यान देता है। इस तरह के विश्लेषण में वर्तमान और अतीत दोनों करीब आते हैं। समाजशास्त्रियों ने अक्सर समय के साथ सामाजिक परिवर्तन, विकास और समाज के चेहरे को बदलने के लिए इतिहास का संदर्भ दिया है। इसी तरह इतिहास को अतीत की व्याख्या करने के लिए सामाजिक पहलुओं (सामाजिक अवधारणाओं) की भी आवश्यकता है। दोनों विषयों के बीच की सीमाएं तब धुंधली और उलझ जाती है जब इन्हें सामाजिक यथार्थ के जटिल जालों को सुलझाने के लिए एक संदर्भ में शामिल किया जाता है। दो विषयों के बीच सीमाओं के इस धुंधलेपन को कई विद्वानों द्वारा उपयोगी शोध प्रयासों के अवसर के रूप में देखा जाता है। 'व्हाट इज हिस्ट्री' नामक पुस्तक लिखने वाले ई. एच. कार (1967) ने तर्क दिया है कि अधिक सामाजिक इतिहास और अधिक ऐतिहासिक समाजशास्त्र दोनों के लिए बेहतर होता है। उनके बीच की सीमा को आदान प्रदान के लिए खुला रखा जाना चाहिए। कई समाजशास्त्रियों ने अंतर-अनुशासनात्मक और ज्ञान उत्पादन को समृद्ध करने के दोनों विषयों के बीच लेनदेन के इस प्रस्ताव की भी वकालत की है।

सामाजिक परिवर्तन एक वास्तविकता है और यह स्वभाविक है। इतिहास समय और काल के संबंध में इसका विश्लेषण करने के लिए प्रतिबिंबित या वास्तविक तरीका दिखाता है। वास्तव में, इतिहास परिवर्तन की निरंतर चेतावनी देता रहा है भले ही तथ्य स्थायी, अनियमित और अप्रत्याशित है। इस प्रकार इतिहास सावधानीपूर्वक परिवर्तन की जांच और विश्लेषण करने के लिए संदर्भ और प्रासंगिक उपकरण का एक फ्रेम प्रदान करता है। वास्तविकता को पूरा करने के लिए समाजशास्त्र और इतिहास दोनों एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। पूर्व की घटनाओं, आंदोलनों और सामाजिक संस्थानों को समझने के लिए समाजशास्त्र, इतिहास पर निर्भर करता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि समाजशास्त्र समाज के ऐतिहासिक विकास के अध्ययन से भी संबंधित है। समाजशास्त्री, ऐतिहासिक विश्लेषण और व्याख्याओं के माध्यम से पूर्व काल की या पुरानी परंपराओं, संस्कृति, सभ्यताओं के विकास, समूहों और संस्थानों का अध्ययन करता है। विशेष रूप से, जॉन सेली ने सही ही कहा है कि समाजशास्त्र के बिना इतिहास का कोई फायदा नहीं और इतिहास के बिना समाजशास्त्र कुछ नहीं है। किसी भी सामाजिक समस्या को समग्रता और गहराई से समझने के लिए भूतकाल और वर्तमान दोनों समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

एक शिक्षण के रूप में समाजशास्त्र, इतिहास और उसके असाधारण विकास का अध्ययन करने के लिए एक विशेष समझ की प्रस्तुत करने में सहायता प्रदान कर सकता है। उदाहरण के तौर पर, सामाजिक कल्पना का साधन स्पष्ट तथ्यों से परे देखने और तथ्यों के किसी भी ऐतिहासिक घटना के पहलुओं की जांच करने के लिए सामान्य तथ्यों से परे जाने में मदद कर सकता है। सामाजिक कल्पना की अवधारणा देने वाले सी राइट मिल्स (1959) ने कहा कि सामाजिक कल्पना का साधन जीवनी और इतिहास के संदर्भ में दुनिया को देखना शामिल करता है। समाजशास्त्र के अध्ययन में व्यक्तिगत जीवनी चीजों की अपनी योजनाओं में सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भ से जुड़े होते हैं। ऐतिहासिक घटनाओं

के गर्भ में स्थित इस तरह के संबंधों का बुद्धिमानी खोज की जानी चाहिए। वास्तव में, मिल्स ने संरचना, जीवनी और इतिहास जैसे मानव दुनिया के तीन पहलुओं पर जोर दिया। उन्होंने मानव दुनिया के उपरोक्त तीन आयामों के मिलान बिंदु पर विश्लेषण का अपना पैटर्न विकसित किया। जो कि एक व्यवस्थित वास्तविकता के रूप में सामाजिक दुनिया के गठन और आकार के संदर्भ में सामाजिक संरचना पर केंद्रित है। उन्होंने सामाजिक व्यवहार के विशेष पैटर्न के आकार के रूप में मानव व्यवहार को आगे बढ़ाया। चीजों की अपनी योजना में, इतिहास ने धारणा में जोड़ा कि सामाजिक संरचनाओं का आकार और गठन हमेशा समय और स्थान के लिए विशिष्ट होता है क्योंकि वे स्वयं परिवर्तन के अधीन होते हैं इसलिए एक अवधि से दूसरे अवधि में भिन्न होता है। अंत में, जीवनी इस तरह की सभी सामाजिक संरचना को जोड़ती है और सामाजिक अनुभवों के साथ सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को चित्रित करने के व्यक्तिगत अनुभवों के साथ बदलती है और समाज के सदस्य के रूप में उनकी क्रिया कैसे आकार और पुनः आकार प्राप्त करती है। इस प्रकार से, इतिहास किसी भी सामाजिक समस्या का पता लगाने के लिए उसके संदर्भ को समझने और इस समस्या को पूरी तरह समझने में मदद कर सकता है। यह देखा जा सकता है कि किसी समस्या को समझने के लिए केवल एक शैक्षणिक दृष्टिकोण या संदर्भ के फ्रेम से किसी समस्या का विस्तृत विश्लेषण प्राप्त करने में मदद नहीं मिल सकती है बल्कि समाजशास्त्र और इतिहास दोनों की कई समस्याओं का वास्तविक उत्तर सामाजिक इतिहास में और/या ऐतिहासिक समाजशास्त्र में प्राप्त हो सकता है।

आगस्त कॉम्टे का समाजशास्त्र की धारणा समाजशास्त्र और समाज के विकास के अपने विश्लेषण में इतिहास को शामिल करता है। वह विभिन्न ऐतिहासिक चरणों के माध्यम से मानवता के विकास के कारणों पर ध्यान केंद्रित करता है। इसके अलावा, टिली (2001) देखते हैं कि, कार्ल मार्क्स का कैपिटल, मैक्स वेबर का इकोनोमी एंड सोसाइटी या फर्डिनेंड टॉनीज का 'गेमाइनशाफ्ट और गेसेलस्काफ्ट ने अपने सामाजिक विश्लेषण को समृद्ध करने के लिए व्यापक रूप से ऐतिहासिक आयाम का उपयोग किया है। इस तरह के विश्लेषण से पता चलता है कि एक समस्या का पता लगाने और इसके महत्व की जांच करने के लिए समाजशास्त्र इतिहास (उदाहरण के लिए वेबर का विवरण समाजशास्त्रियों द्वारा अपनी सामाजिक व्याख्या विकसित करने के लिए तैयार किए जाने वाले उदाहरण का एक आदर्श प्रकार है) की मदद लेता है। इसके अलावा, इतिहास में समाजशास्त्र को पेश करने के लिए कई चीजें हैं। मिसाल के तौर पर, उपलब्ध ऐतिहासिक स्रोत समाजशास्त्रियों को समाज, विश्लेषण और गतिशीलता पर विश्लेषण के लिए डेटा का एक बड़ा हिस्सा प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, 1700 के दशक के उत्तरार्ध और 1800 के दशक के दौरान यूरोप में सामाजिक उथल-पुथल ने विद्वानों को समाज का अध्ययन करने और सामाजिक विकास के पैटर्न को समझने के लिए प्रेरित किया। इस प्रभाव के लिए, पर्याप्त उदाहरण हैं जो इतिहास के साथ समाजशास्त्र के संबंध प्रदर्शित करते हैं। उदाहरण के लिए, कॉम्टे, स्पेंसर, मार्क्स, दुर्खाइम, वेबर, सिममेल, पारेतो, पार्सन्स और समकालीन समाजशास्त्री जैसे हबर्मास, मैनहेम, वालेंस्टीन, कास्ल्स इत्यादि जैसे कई समाजशास्त्रियों ने अपने सामाजिक विश्लेषण में ऐतिहासिक आयाम का उपयोग किया। उन्होंने आधुनिकता, विकास के मॉडल और शहरी समुदायों की समस्याओं पर अधिक जोर दिया। समाजशास्त्र अपने शुरूआती समय में और 20वीं शताब्दी की शुरुआत में वर्तमान और अतीत दोनों में रुचि रखता था। अवधारणाओं को परिभाषित करने और संदर्भ में इसे व्यवस्थित करने के लिए इसे अनिवार्य रूप से ऐतिहासिक घटना के रूप में ऐतिहासिक घटना मिली। सामाजिक अवधारणाएं ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण घटनाओं के कारण व्याख्या में भी मदद करती हैं।

19वीं और 20वीं शताब्दी के ऐतिहासिक विकास में समाजशास्त्र के सिद्धांतों का विकास दर्शन, ज्ञान-मीमांसा और प्रगतिशील सोच के स्तर पर देखा गया है। विशेष रूप से,

सामाजिक सिद्धांत बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक माहौल का उत्पाद रहा है जिसके भीतर वे विकसित हुए थे। उदाहरण के लिए, ज्ञानोदय उल्लेखनीय बौद्धिक विकास का समय था। इस अवधि में कुछ महत्वपूर्ण विचार और सामाजिक विचार उभरे। नव विकसित इन विचारों और चिंतन ने पुराने विचारों को बदल दिया। इस अवधि ने तर्क के कारण, तर्कसंगतता, वैज्ञानिक तरीकों या अनुभवजन्य शोध के माध्यम से समझे जा सकने वाले समाज को जन्म दिया। इसी तरह, 1789 में फ्रांसीसी क्रांति ने एक जगह बनाई जब मनुष्य के सार्वभौमिक अधिकारों ने सामाजिक निर्माण के आवश्यक तत्वों के रूप में स्वीकार किया। स्वतंत्रता, समानता, राष्ट्रवाद आदि जैसे नए विचारों ने आकार लिया। समाज की यह प्रभावित संरचना और विचारधाराओं और सामाजिक-राजनीतिक प्रतियोगिताओं के नए समूह का निर्माण किया। कई पहले समाजशास्त्री इस तरह के युग काल के उत्पाद थे और प्रगतिशील विचारों की परंपरा को आगे बढ़ाते थे। सेंट साइमन फ्रांसीसी क्रांति से सीधे प्रभावित था, जबकि कॉम्टे फ्रांसीसी क्रांति के बाद में रहते थे। इन पूर्व समाजशास्त्रियों ने चल रहे सामाजिक-सांस्कृतिक उथल-पुथल और मानवीय मामलों को समझने और परीक्षण करने के विचार दिए। उदाहरण के लिए, कॉम्टे (1865) नैतिक और सामाजिक दर्शन, इतिहास के दर्शन और महाद्वीप और विज्ञान के विशिष्ट तरीकों को एक साथ लाता है। कार्ल मार्क्स और मैक्स वेबर, जिन्हें समाजशास्त्र के संस्थापक के रूप में भी जाना जाता है, उन्होंने अपने सामाजिक विश्लेषण में इतिहास का उपयोग किया है। मार्क्स का सामाजिक परिवर्तन और ऐतिहासिक भौतिकवाद का विश्लेषण इसका उदाहरण है। इसी तरह, वेबर ने इतिहास और उसके विश्लेषण के गर्भ में तर्कसंगतता, आधुनिकता, पूंजीवाद, धर्मनिरपेक्ष समाज, शहर और आदर्श प्रकारों जैसे उनकी अवधारणाओं का विस्तार किया है। वेबर ने अपने कार्य 'इकोनॉमी एंड सोसाइटी' में जैसा कि पहले भी बताया गया है, ऐतिहासिक व्याख्या को ऐतिहासिक घटना के मूल और परिणामों के बारे में धर्मनिरपेक्ष सिद्धांतों के अपने प्रस्तावों को विस्तारित करने के लिए ऐतिहासिक व्याख्याओं को सामने लाता है।

समाजशास्त्र के क्षेत्र के कई बुद्धिजीवियों ने सामाजिक इतिहास के विकास की दिशा में काम किया है। विशेष रूप से, 19वीं और 20वीं शताब्दी के अंत में जर्मन भाषी देशों और अन्य देशों के कुछ इतिहासकार, जिन्होंने इस शिक्षण के पारंपरिक मार्गों को विचलित करने की हिम्मत की, धीरे-धीरे सामाजिक इतिहास के विकास में योगदान देने लगे। उदाहरण के लिए, जे एच टर्नर ने सभ्यता और जंगल के बीच की सीमाओं के संदर्भ में अमेरिका की स्थिति की व्याख्या की। सी. ए. दाढ़ी ने अमेरिकी गृहयुद्ध का औद्योगिक उत्तर और कृषक दक्षिण के बीच संघर्ष के रूप में व्याख्या और विश्लेषण किया। इसी प्रकार, बेल्जियम हेनरी पिरेन ने यूरोप का एक सामाजिक-आर्थिक इतिहास विकसित किया। डच विद्वान जॉन हुईज़िंग मध्य युग के अंत में अपना काम समर्पित किया और सांस्कृतिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसके अलावा, संक्षेप में ठहराव के बाद, 1920 के दशक में इतिहास में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया। यह बदलाव वास्तव में एनाल्स स्कूल से जुड़ा हुआ था, जिसे दुर्खिम के समाजशास्त्र से प्रभावित स्ट्रैसबर्ग विश्वविद्यालय के लुसीन फरवरी (1878-1956) और मार्क ब्लोच (1856-1944) के दो प्रसिद्ध प्रोफेसरों द्वारा शुरू किया गया था। उन्होंने इतिहास के व्यापक अध्ययन की वकालत की थी। इसके अलावा, समय के साथ-साथ, समाजशास्त्र ने भी अपने दृष्टिकोण और प्रणाली संबंधी (मेथडलाजिकल) परंपराओं में वृद्धि की। यद्यपि 20वीं शताब्दी के दौरान समाजशास्त्र और इतिहास थोड़ा अलग हो गए, लेकिन एक पूर्ण अलगाव कभी नहीं हुआ। यह मुख्य रूप से इस कारण से था कि एक नया और रोचक शोध अभिविन्यास अर्थात् ऐतिहासिक समाजशास्त्र ने आकार लिया और धीरे-धीरे सामाजिक अध्ययन में एक प्रमुख स्थान प्राप्त किया। अंततः इतिहास ने अतीत के सामाजिक विश्लेषण और वर्तमान के लिए प्रासंगिक प्रासंगिकता को साबित

करने में मदद की। यदि कोई सामाजिक सिद्धांतों में अपनी जड़ों की तलाश करता है, तो पार्सन्स की संरचनात्मक-कार्यात्मकता को एक महत्वपूर्ण प्रेरक कारक माना जा सकता है जो समाजशास्त्र और इतिहास को एक स्थान पर लाता है। इसके अलावा, 1957 में रॉबर्ट नेली बेलह ने 'ताकीगावा धर्म' नामक पुस्तक प्रकाशित की, जिसने विरोधवादी नैतिकता के जापानी समकक्ष को प्रकट किया। 1959 में नील जे स्मेल्सर ने अपनी पुस्तक 'सोशल चेंज इन इंडस्ट्रियल रेवोल्यूशन' में अंग्रेजी औद्योगिक क्रांति के दौरान कपास उद्योग के विकास की जांच करके सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति की व्याख्या करने का प्रयास किया। इसी तरह, 1960 के दशक में टैल्कॉट पार्सन्स ने सोसाइटीजः इवोल्यूशनरी एंड तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य (1971) और 'द सिस्टम ऑफ मॉडर्न सोसाइटीज' (1971बी) जैसे कार्यों में कार्यात्मक भेदभाव के माध्यम से प्रणाली की अनुकूली क्षमता बढ़ाने की अवधारणा के आधार पर सामाजिक विकास का सिद्धांत विकसित किया।। इसके अलावा, 1970 के दशक के मध्य में, नॉरबर्ट एलियास ने सभ्यता के सिद्धांत पर काम किया जिसमें उन्होंने व्यक्तित्व, व्यवहार और राज्य के गठन के सिद्धांत में ऐतिहासिक परिवर्तनों को व्यापक रूप से शामिल किया।

ऐसा कहा जाता है कि 1946 से 1960 के दशक संभवतः समाजशास्त्र का स्वर्ण युग था, जब इसका वैज्ञानिक दृष्टिकोण स्पष्ट लग कर रहा था, तो इसका भविष्य प्रत्याशित दिखाई देता था और इसके बौद्धिक अगुओं ने क्या करना है और कैसे करना है इसमें सुनिश्चित थे। हालांकि, बदलते समय सामाजिक जरूरतों और 1960 के बाद वैश्वीकरण ने समग्र सामाजिक संभाषण, एक दुसरे से जुड़ी हुई दुनिया, नेटवर्क समाज, सूचना क्रांति और सांस्कृतिक अध्ययनों के उद्भव ने समाजशास्त्र के संदर्भ को बदल दिया है। आधुनिकता अतीत का विषय बन गया। पिछले कुछ दशकों में समाजशास्त्री 'पोस्ट' पर बहुत अधिक चिन्तित हो गए है जैसे कि उत्तर-औद्योगिकीकरण, उत्तर-उपनिवेशवाद, उत्तर प्रत्यक्षवाद उत्तर संरचनावाद। हबर्मस ने (कार्य और सार्वजनिक क्षेत्र के बारे में बताया), फूको ने (आधुनिकता और जेल प्रणाली), एंथनी गिडेंस ने (आधुनिकता) जैसे विभिन्न समाजशास्त्री ने अपने सामाजिक विश्लेषण को विस्तारित करने के लिए ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य पर काम किया और इसका उपयोग किया।

5.2.3 समाजशास्त्र और इतिहास में अंतर

समाजशास्त्र और इतिहास के बीच अंतर हालांकि सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में समाजशास्त्र और इतिहास दोनों ही दो भिन्न बौद्धिक शैक्षणिक विषय है, दोनों ही अपनी शैक्षणिक पद्धतियों, दृष्टिकोणों और उद्देशों में भिन्नता रखते हैं। जॉन एच् गोल्डथोर्पे (1991) जिन्होंने यूनिवर्सिटी कॉलेज, लन्दन में बीसवीं शताब्दी के मध्य में इतिहास का अध्ययन किया, समाजशास्त्र और इतिहास दोनों के अनुसंधान दृष्टिकोणों की तुलना करते हैं। उनका दावा है की समाजशास्त्र और इतिहास दोनों ही अपने वर्तमान और अतीत के अभिविन्यास में भिन्न हैं। इतिहासकार समय-स्थान को स्थानबद्ध कर अपने निष्कर्षों पर ज़ोर देते हैं जबकि समाजशास्त्री स्थान-समय के आयामों से ऊपर उठकर अपनी समझ पर विश्वास करते हैं। अतः समाजशास्त्र और इतिहास में बड़ा अंतर विश्लेषण के लिए रखे गए तथ्य और साक्ष्य की प्रकृति से सम्बंधित है। समाजशास्त्री अतीत और प्राथमिक तथ्यों में अधिक दिलचस्पी रखते हैं जबकि इतिहासकार अतीत में दिलचस्पी रखते हैं और संग्रहित माध्यमिक तथ्यों और अतीत की घटनाओं की खोज करते हैं। एक समृद्ध सामाजिक विश्लेषण के लिए, अक्सर यह तर्क दिया जाता है कि समाजशास्त्रियों को ऐतिहासिक रूप से अवगत होना चाहिये – उन्हें ऐतिहासिक परिस्थितियों और सीमाओं से भी अवगत होना चाहिए जो उनके सामाजिक मुद्दों के विश्लेषण की सुचना देता हो। गोल्डथोर्पे (1991) का तर्क है कि इतिहास

और समाजशास्त्र महत्वपूर्ण रूप से दो भिन्न बौद्धिक उद्धम हैं। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि इतिहास और समाजशास्त्र को निष्कर्ष के तहत एक मानना गलत है। इतिहास किसी भी अर्थ में समाजशास्त्र की तरह प्राकृतिक विज्ञान नहीं है। यह रंगहीन इकाइयों की तलाश नहीं करता। ऐसा कहा जाता है कि इतिहास तथ्यों को पुनः प्रस्तुत करता है जबकि प्राकृतिक विज्ञान तथ्यों की व्याख्या करता है। इतिहासकार ठोस तथ्यों को इकट्ठा करते हैं और इन तथ्यों को एक अनूठी घटना के रूप में पुनः प्रस्तुत करते है जबकि समजशास्त्री विशिष्ट तथ्यों को खोजने और सूत्रबद्ध करने के लिए प्रासंगिक और विभिन्न श्रेणियों में परिकल्पना, वर्गीकृत और व्यवस्थित डेटा पर कार्य करते हैं।

समाजशास्त्र और इतिहासः भिन्नताएं

सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में समाजशास्त्र और इतिहास दो अलग अनुशासन है जो पद्धतियों, दृष्टिकोणों और उद्देश्यों में भिन्न है। समाजशास्त्रियों में संख्याओं की और इतिहासकारों में तिथियों और शब्दों की लालसा होती है। समाजशास्त्री नियमों को मान्यता देते हैं और विविद्धता को अनदेखा करते हैं जबकि इतिहासकार व्यक्तियों और विशिष्टता पर बल देते हैं। समाजशास्त्री अवधारणाओं के प्रकार विज्ञान को बनाने के लिए सामान्यीकृत, एकरूपता और प्रक्रियाओं की तलाश करते हैं जो इतिहासकारों द्वारा किसी विशेष मामले में प्रस्तावित वास्तविक तथ्यों से अलग होता है। इतिहास को समाज के मूर्त और विवरणात्मक विज्ञान के रूप में देखा जाता है। इतिहास सामाजिक अतीत की एक तस्वीर को बनाने का प्रयास करता है। दूसरी तरफ, समाजशास्त्र को समाज का सारांश और सैद्धांतिक विज्ञान का एक रूप कहा जाता है। इस विषय में समाजशास्त्र का विस्तार इतिहास से व्यापक माना जाता है।

यह सत्य है कि समाजशास्त्र और इतिहास एक ही भाषा नहीं बोलते। दोनों ही व्यवाहारिक रूप से कई मायनों में एक दूसरे से भिन्न मत रखते है। विशेषकर, हमें इसे केवल दो भिन्न व्यवसाय मात्र के रूप में नहीं देखना चाहिए, अपितु यह एक संरचना है जिसकी भाषा, विचार की शैली और मूल्य भिन्न है जो शिक्षा और प्रशिक्षण में भिन्नता के द्वारा आकार पाते हैं। ऐसा कहा जाता है कि समाजशास्त्रियों में संख्याओं की और इतिहासकारों में तिथियों और शब्दों की लालसा होती है; समाजशास्त्री नियमों को मान्यता देते हैं और विविद्धता को अनदेखा करते हैं जबकि इतिहासकार व्यक्तियों और विशिष्टता पर बल देते हैं। इसके आलाव, समाजशास्त्र इतिहास से इन अर्थों में भिन्न है कि समाजशास्त्री अवधारणाओं के प्रकार विज्ञान को बनाने के लिए सामान्यीकृत, एकरूपता और प्रक्रियाओं की तलाश करते हैं जो इतिहासकारों द्वारा किसी विशेष मामले में प्रस्तावित वास्तविक तथ्यों से अलग होता है। अनेक विद्वानों ने इतिहास को समाज के मूर्त और विवरणात्मक विज्ञान का एक रूप कहा है। इतिहास सामाजिक अतीत की एक तस्वीर को बनाने का प्रयास करता है। दूसरी तरफ, समाजशास्त्र को समाज का सारांश और सैद्धांतिक विज्ञान का एक रूप कहा जाता है। इस विषय में समाजशास्त्र का विस्तार इतिहास से व्यापक माना जाता है। समाजशास्त्र न केवल सामाजिक वर्तमान से अपितु यह सामाजिक अतीत से भी सम्बंधित होता है। अतः समाजशास्त्र मुद्दों की एक विस्तृत श्रृंखला को शामिल करता है; यह अक्सर व्यापक उद्देश्य को लक्षित करता है और समान्यीकरण को उत्पन्न करने के लिए समय और स्थान की सीमाओं का अतिक्रमन कर सैद्धांतिक कथनों में स्थापित करता है।

बोध प्रश्न 1

1) समाजशास्त्र और इतिहास के बीच परस्पर संबंध की चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) समाजशास्त्र और इतिहास के बीच अंतर की चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

3) निम्नलिखित समाजशास्त्रियों में से किसने अपने समाजशास्त्रिय विश्लेषण में इतिहास का प्रयोग किया?

क) अगस्त कॉम्ते

ख) एमिली डर्कहेम

ग) कार्ल मार्क्स

घ) उपरोक्त सभी

5.3 एक उप संकाय के रूप में ऐतिहासिक समाजशास्त्र

ऐतिहासिक समाजशास्त्र, समाजशास्त्र की एक शाखा है। यह समाजशास्त्र और इतिहास के मिलान बिंदु के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुआ। दोनों संकाय सामान्य विषयों पर व्याख्या हेतु अवधारणा और सैद्धांतिक आधार के रूप में एक दूसरे के समीप आयी है जो दोनों की क्षेत्रीय सीमाओं को छूती है। सीमाओं को पार करने की इस प्रक्रिया ने ऐतिहासिक समाजशास्त्र नमक एक उप-क्षेत्र के विकास को जन्म दिया। ऐतिहासिक समाजशास्त्र अपने विश्लेषण में इतिहास का उपयोग करता है। इसके अतिरिक्त, यह ध्यान देने योग्य है कि परिवार में परिवर्तन और विकास के मुद्दों, रिश्तेदारी, प्रवास और दहेज प्रणाली के मुद्दों इत्यादि सभी का एक अतीत है जिसका प्रभाव उनकी वर्तमान स्थिति पर पड़ता है। यह अतीत समस्या की वर्तमान स्थिति या विचाराधीन मुद्दों को समझने के महत्वपूर्ण संकेत रखता है। ऐतिहासिक समाजशास्त्र इस बात

ऐतिहासिक समाजशास्त्र

ऐतिहासिक समाजशास्त्र, समाजशास्त्र की एक शाखा है। यह बीसवीं सदी के दौरान मुख्य रूप से समाजशास्त्र और इतिहास के टकराव के परिणामस्वरूप उभरा। समाजशास्त्र के एक उप-क्षेत्र के रूप में ऐतिहासिक समाजशास्त्र अनुशासन को दो महत्वपूर्ण योगदान देगा। पहला, यह सामाजिक विश्लेषण को लाभदायक रूप से एतिहासिक रूप दे सकता है यह लाभदायक रूप में सामाजिक विश्लेषणों का ऐतिहासिकरण, ऐतिहासिक दृष्टि से किन्ही सामाजिक विश्लेषणों को स्थापित करने में मदद कर सकता है। दूसरा, यह महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों पर ध्यान आकर्षित करने में मदद करेगा जिन्हें गंभीर रूप से ऐतिहासिक विश्लेषणों की आवश्यकता है परन्तु जो किन्ही कारणों से सामाजिक विश्लेषणों में अन्देखे या उपेक्षित रह गए हैं।

में दिलचस्पी रखता है कि लोग, समुदाय और समाज बदलते समय के साथ कैसे बदल रहे हैं, उन्होंने स्वयं को समकालीन आधुनिक समाजों में कैसे परिणत किया? साम्राज्यवाद, पुनर्जागरण, फ्रांसीसी क्रांति और औद्योगिक क्रांति जैसे महान परिवर्तनों ने किस प्रकार आधुनिक दुनिया को आकार दिया? जैसा कि पहले भी चर्चा की गई है अनेक प्रारंभिक समाजशास्त्रियों जैसे काल्डन, कॉम्टे, स्पेंसर, वेबर, डर्कहेम साइमन इत्यादि ने इस क्षेत्र में बड़े पैमाने पर योगदान दिया है। उदाहरण के लिए, मैक्स वेबर ने अपने अध्ययन, 'दा सिटी' जो बहुत पहले 1921 में प्रकाशित हुआ, के अंतर्गत ऐतिहासिक प्रतिमान का प्रयोग किया और आधुनिक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के वाहक और आधुनिक राष्ट्र-राज्य के अग्रदूत के रूप में शहर की भूमिका की जांच की। इतिहास की घटनाओं पर अपने सैद्धांतिक कथनों के सत्यापन में पूर्व समाजशास्त्रियों के समालोचनात्मक योगदान के आलावा, यह कहा जाता है कि फ्रांस में जॉर्ज बेलेंदियर और अमरीका में रोबर्ट निस्बेट ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य की प्रासंगिकता की ओर ध्यान आकर्षित कराने वाले अग्रणीय समाजशास्त्री थे। एस एन एसेंस्तेड, बी मूर, टी स्कोक्पेल, सी टिली, जे हबेर्मस, एम कैस्टाल्स, ए जी फ्रेंक, आई वालेंस्टीन सभी ने आधुनिक विश्व में विकास के प्रतिमानों पर अपने सामाजिक विश्लेषण और सैद्धांतिक विचारों में इतिहास को प्रमुख स्थान दिया।

ऐसा माना जाता है कि ऐतिहासिक समाजशास्त्र कहे जाने वाले भिन्न उप-क्षेत्र का विचार बीसवीं शताब्दी के आस-पास मूर्त हुआ। यह वर्तमान के प्रत्यक्ष अवलोकन और भूतकाल के अप्रत्यक्ष अवलोकन से आने वाले प्रमाणों के बीच समाजशास्त्री द्वारा प्रारंभ किये गए भेद के कारण प्रारंभिक रूप से विकसित होना शुरू हुआ। ऐतिहासिक समाजशास्त्रियों ने वास्तव में अतीत से वर्तमान के संबंध को समझना प्रारंभ कर दिया था। जन्य कारणों के संबंध का पता लगाना या प्रसंग के संबंध में समस्या को खोजना ना केवल समझने के लिए बल्कि समकालीन विकास की पूरी तरह से जाँच करने के लिए भी महत्वपूर्ण हो जाता है। मिसाल के तोर पर जर्गन हेबरमास ने अपने कार्य 'थ्योरी ऑफ़ कम्युनिकेटिव एक्सन' में आधुनिक इतिहास से सम्बंधित विकासों की व्याख्या की है। उन्होंने आधुनिकीकरण, संचार, तर्कसंगतता और मानव स्वतन्त्रता से सम्बंधित विकासों पर मार्क्स, वेबर, डर्कहेम, पार्सन्स व अन्य जैसे पूर्व समाजशास्त्रियों के काम का आलोचनात्मक अध्ययन किया है। इसी प्रकार, मैनुअल कास्टल्स ने अपने प्रसिद्ध कार्य 'दा इनफोर्मेशन ऐज' में ज़रूरतों, विकल्पों और चुनौतियों को जिसका सामना मानवता आज कर रही है को समझने के लिए व्यापक रूप से आधुनिक दुनिया में बदलती सुचना प्रणाली और पहचान की जांच की। इसके अलावा, समीर अमीन (1989), जेम्स एम ब्लांट (1993), जैक गुडी (1996), आंद्रे गंदर फ्रैंक (1998), जैसे कई विद्वानों ने ऐतिहासिक या राजनीतिक समाजशास्त्र के क्षेत्र में काम किया। उन्होंने मानवीय सामाजिक विचारों और मामलों से प्राप्त यूरोप के विशेषाधिकार प्राप्त स्थान से प्रतिस्पर्धा के लिए आधुनिक दुनिया के उद्भव के इतिहास की खोज की। उन्होंने अपरिहार्य रूप से इस विचार को चुनौती दी कि आधुनिकता यूरोप में विकसित हुई और उसके बाद दुनिया के अन्य हिस्सों में फ़ैल गई। ऐतिहासिक समाजशास्त्र के प्रभाव क्षेत्र के भीतर, उन्होंने समय और स्थान के द्वैतवाद से संघर्ष किया, यूरोप और अमरीका से परे देशज लोगों द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका को उबारने के लिए यूरोप केन्द्रित धारणा के विचार पर विवाद किया।

ऐतिहासिक समाजशास्त्र जो की किसी समस्या को समझने के लिए अनिवार्य रूप से इतिहास में उतरता है ज्ञान के सृजन की वर्गावली को विस्तृत बनाने की लिए अंतरविषयी विद्दवत्ता के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। समाजशास्त्र के उप-क्षेत्र के रूप में ऐतिहासिक समाजशास्त्र इस अनुशासन में दो प्रमुख योगदान देने की संभावना रखता है। पहला, ऐतिहासिक रूप से किसी भी सामाजिक विश्लेषणों को स्थापित करने में मदद करने के लिए यह लाभपूर्वक सामाजिक विश्लेषणों को ऐतिहासिक बना सकता है। यह न केवल

विश्लेषणों के महत्व को बढ़ाएगा अपितु उनके समय और स्थान की सीमाओं को निर्धारित कर संदर्भतः सामाजिक विश्लेषणों को आधार प्रदान करेगा और इस प्रकार से अन्य आनुभविक समान्यीकरण के साथ भी समान रूप से संलग्न होगा। दूसरा, अति व्यापक ऐतिहासिक समाजशास्त्र उन महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों पर ध्यान खींचने में मदद करेगा जिन्हें ऐतिहासिक विश्लेषण की गंभीर आवश्यकता है परन्तु किन्ही कारणों से सामाजिक विश्लेषणों में सदा अनदेखा या उपेक्षित ही रहा। अनेक समाजशास्त्री इस बात की वकालत करते हैं कि इतिहास को समाजशास्त्रियों के सामाजिक विश्लेषणों या संवेदनशीलताओं की व्याख्या ना केवल सामाजिक उद्भव, संस्कृति और सभ्यता में बदलाव या विकास संबंधी परम्परा का अध्ययन करते समय करनी चाहिए अपितु तब करनी चाहिए जब हम स्थायित्व या रोजमर्रा के जीवन की वास्तविकता का अध्ययन कर रहें हों।

बोध प्रश्न 2

1) समाजशास्त्र और इतिहास के बीच परस्पर टकराव के परिणाम के रूप में ऐतिहासिक समाजशास्त्र पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) वे कौन से प्रमुख समाजशास्त्री है जिन्होंने ऐतिहासिक समाजशास्त्र के क्षेत्र में काम किया? चर्चा करें?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) निम्न में से किसने अमरीका में ऐतिहासिक समाजशास्त्र के विकास को प्रेरित किया?

क) जॉर्ज बेलेंदियर

ख) रोबर्ट निस्बेट

ग) मैक्स वेबर

घ) कार्ल मार्क्स

5.4 सारांश

इस इकाई में, हमने समाजशास्त्र के साथ इतिहास और उसके अंतर्संबंध के अर्थ और परिभाषा की जांच की। हमने देखा कि समाजशास्त्र और इतिहास किस प्रकार परस्पर जुड़े हुए हैं और वास्तव में एक दूसरे पर निर्भर हैं? संस्कृति और संस्थाओं का इतिहास भूतपूर्व समाज, उसकी गतिविधियों और विकास को समझने में सहायक हैं। इसी प्रकार, समाजशास्त्र अपने उपकरणों जैसे सामाजिक कल्पना, आदर्श प्रकार और कई अन्य भी उपलब्ध कराता है, जिससे पिछली सामाजिक घटनाओं को समझने और अवधारणा बनाने में मदद मिलती है। हमने यह भी देखा कि समाजशास्त्र वर्तमान से कैसे संबंधित है, परन्तु यह अपने संदर्भ को भूतकाल में स्थापित करता है। यह देखा गया है कि दोनों विषयों को एक मुद्दे का पूरा आंकलन करने के लिए एक दूसरे की आवश्यकता होती है। समाजशास्त्र के लिए यह आवश्यक है कि संदर्भ को समझने और इसके विश्लेषणों में महत्वपूर्ण मूल्य जोड़ने के लिए अतीत में झाँके। इसी तरह इतिहास भी ऐतिहासिक घटनाओं का अध्ययन करते समय सामाजिक-सांस्कृतिक पहलुओं को ध्यान में रखता है। इतिहासकार को ऐतिहासिक घटनाओं को विस्तृत रूप से लिखने और समझाने के लिए सामाजिक पृष्ठभूमि और कई बार समाजशास्त्रीय अवधारणाओं की भी आवश्यकता होती है।

इस इकाई में, हमने समाजशास्त्र और इतिहास के बीच भेदों का मूल्यांकन भी किया है। यह वर्णित है कि समाजशास्त्र वर्तमान के साथ अधिक सम्बंधित है जबकि इतिहास अतीत के साथ। इसी के अनुसार इनके दृष्टिकोण और उद्देश्य भी भिन्न होते हैं। इसके अलावा यह भी देखा गया है कि दोनों विषयों के बीच के संबंध को कई मिथकों और भ्रांत धारणाओं से भी चिंहित किया गया है। उदाहरण के लिए, इतिहासकारों द्वारा समाजशास्त्रियों को ऐसे पेशेवरों के रूप में माना जाता है जिनकी अमूर्त विशिष्ट शब्दावली विशेष समय और स्थानों के प्रति संवेदनशीलता का अभाव रखती है। दूसरी तरफ़, इतिहासकारों को अक्सर सूचनाओं के संग्रहकर्ता मात्र के रूप में देखा जाता है जो आवश्यक शिष्टता और पद्धतिगत सूक्ष्मता के साथ अपने ज्ञान का विश्लेषण करने में असमर्थ हैं। कहा जाता है कि इतिहास अधिक यथार्थपूर्ण और वर्णनात्मक होना चाहिए जबकि समाजशास्त्र को अधिक भावात्मक और सैद्धांतिक विज्ञान माना जाता है। हालांकि एक दूसरे से निकट संबंध होने के बावजूद भी ऐसा कहा जाता है कि ये दोनों विषय अपने उद्देश्यों, वैश्विक विचारों, दृष्टिकोणों और पद्धतियों के संदर्भ में दोनों भिन्न बौद्धिक उद्धम हैं।

हमने यह भी उल्लेखित किया है कि दोनों विषयों के परस्पर टकराव के परिणामस्वरूप ऐतिहासिक समाजशास्त्र कैसे उभरा है। यह भी उल्लेखित किया गया है कि समाजशास्त्र की शाखा के रूप में ऐतिहासिक समाजशास्त्र ने एक अंतरविषयी विद्वत्ता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। प्रमुख अनुशासन के रूप में समाजशास्त्र के प्रारंभ से कई समाजशास्त्री, जैसे मार्क्स, वेबर, डर्कहेम उसके बाद कास्टेलस, अमीन, फ्रैंक और ब्लॉट जैसा की उल्लेख किया गया है ने इस क्षेत्र में विस्तृत योगदान दिया है। संक्षेप में, समाजशास्त्र और इतिहास दोनों ही, हालांकि सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में दोनों भिन्न विषय होने के बावजूद परस्पर बहुत अधिक जुड़े हुए हैं और अध्ययन के क्षेत्र में एक दूसरे के पूरक भी हैं।

5.5 संदर्भ

एब्बट, ए. (1991). हिस्ट्री एंड सोशियोलॉजीः दा लोस्ट सिंथेसिस, सोशिअल साइंस हिस्ट्री, वॉल्यूम. 15, नंबर 2, पृ. 201-238

कार, ई. एच (1967). व्हाट इज़ हिस्ट्री? लंडन, विंटेज।

कॉम्टे, अगस्ते. (1865) जर्नल व्यूह ऑफ़ पोज़िटिविज्म. अनुवाद. जे. एच. ब्रिजिज़. लंडन, ट्रबनर एंड को द्य

गिन्सबर्ग एम. (1932) हिस्ट्री एंड सोशियोलॉजी, फिलोसोफी, वॉल्यूम. 7, नंबर 28, पृ. 431-445

गोल्द्थोर्पे जॉन एच. (1991). दा यूज़िज़ ऑफ़ हिस्ट्री इन सोशियोलॉजीः रिफ्लैक्शन्स ऑन सम रीसेंट तेंड़ेंसी, दा ब्रिटिश जर्नल ऑफ़ सोशियोलॉजी वॉल्यूम. 42, नंबर 2 (जून., 1991), प्रष्ठ 211-230

ग्रिफिन, एल. जे. (1995) हाऊ इज़ सोशियोलॉजी इन्फॉर्मड बाय हिस्ट्री? सोशियल फोर्सिज़, वॉल्यूम. 73, नंबर 4, प्रष्ठ 1245-1254

मल्लारी, ए. ए. टी. (2013). ब्रिजिंग हिस्ट्री एंड सोशियोलॉजी इन स्टडिंग कोलोनियल प्रिज़न्सः नोट्स एंड रिफ्लेक्षंस, फिलिपींस सोशियोलॉजीकल रिव्यू, वॉल्यूम. 61, नंबर 1, सोशियोलॉजी एंड इंटरडिसिप्लिनेरी, पृ. 43-54.

मिल्स, सी. राइट (1959). दा सोशियोलॉजीकल इमैजिनेशन, न्यू यॉर्क, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस।

इस्टराइकर, एमिल. (1978). मार्क्स कम्पेरेटिव हिस्टोरिकल सोशियोलॉजी, डाईलेक्टिकल अन्थ्रोपोलोजी, वॉल्यूम. 3, नंबर 2, पृ. 139-155

टिली, चाल्स (2001). हिस्टोरिकल सोशियोलॉजी, इन इंटर्नेशनल इनसाईंक्लोपीडिया ऑफ़ दा बीहेवियोरल एंड सोशल साइन्सेज़, एम्स्टर्डमः एल्सिविएर. वॉल्यूम. 10, पृ. 6753–6757.